दिनांक–06.02.2025

U.G. Third Semester MDC(Philosophy)

न्याय दर्शन में प्रत्यक्ष

न्याय दर्शन में प्रत्यक्ष प्रमाण को इंद्रियों के सीधे संपर्क से प्राप्त ज्ञान के रूप में परिभाषित किया गया है। यह इंद्रियबोध पर आधारित होता है और इसमें पाँच इंद्रियों (दृष्टि, श्रवण, स्पर्श, गंध और स्वाद) के माध्यम से प्राप्त ज्ञान शामिल होता है। प्रत्यक्ष प्रमाण की व्याख्या निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से की गई है–

1. **इंद्रिय–संयोजन** : प्रत्यक्ष ज्ञान तब प्राप्त होता है जब इंद्रियाँ और इंद्रियविषय (वस्तु) के बीच संपर्क होता है। यह संपर्क सही और स्पष्ट होना चाहिए ताकि ज्ञान सत्य और स्पष्ट हो सके।
2. **निर्विकल्पक और सविकल्पक** : प्रत्यक्ष ज्ञान को दो प्रकारों में विभाजित किया गया है : निर्विकल्पक (अविभाजित) और सविकल्पक (विभाजित)। निर्विकल्पक ज्ञान वह है जो इंद्रियों के सीधे संपर्क से तुरंत प्राप्त होता है, जबकि सविकल्पक ज्ञान वह है जो मन के माध्यम से विश्लेषण और पहचान के बाद प्राप्त होता है।
3. **प्रमाणबाधक** : प्रत्यक्ष ज्ञान सत्य और प्रमाणित होता है जबतक कि कोई अन्य प्रमाण इसे गलत साबित न करे। यदि प्रत्यक्ष अनुभव में कोई त्रुटि होती है, तो अन्य प्रमाणों के माध्यम से इसे सुधारना आवश्यक है।
4. **साक्षात्कार** : प्रत्यक्ष प्रमाण आत्म–साक्षात्कार के माध्यम से भी प्राप्त किया जा सकता है, जिसमें व्यक्ति अपने भीतर के सत्य और वास्तविकता को सीधे अनुभव करता है।

न्याय दर्शन में प्रत्यक्ष प्रमाण को ज्ञान का सबसे महत्त्वपूर्ण और प्राथमिक स्रोत माना गया है, क्योंकि यह इंद्रियों के सीधे अनुभव पर आधारित होता है और तर्कसंगत विश्लेषण की नींव प्रदान करता है।

डॉ. श्रवण कुमार मोदी
सहायक प्राध्यापक, दर्शनशास्त्र विभाग
शिवदेनी राम अयोध्या प्रसाद महाविद्यालय
बारा चकिया,पूर्वी चम्पारण
मो0–9608685335
Email Id- shrawankumarmodi1973@gmail.com

दिनांक–06.02.2025

U.G. Third Semester MIC(Philosophy)

न्याय के अनुसार ज्ञान के प्रकार

Ans. न्याय दर्शन भारतीय दर्शन का एक प्रमुख स्कूल है, जो तर्कशास्त्र और ज्ञान के सिद्धांतों पर आधारित है। न्याय दर्शन के अनुसार ज्ञान के चार प्रमुख प्रकार हैं :

1. **प्रत्यक्ष** (Perception) : प्रत्यक्ष ज्ञान वह ज्ञान है जो इंद्रियों के सीधे संपर्क से प्राप्त होता है। इसे प्रत्यक्ष अनुभव या इंद्रियबोध भी कहा जाता है।
2. **अनुमान** (Inference) : अनुमान ज्ञान वह है जो प्रत्यक्ष ज्ञान के आधार पर निष्कर्ष निकालने से प्राप्त होता है। इसमें तर्क और विचार की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है।
3. **उपमान** (Comparison) : उपमान ज्ञान वह है जो तुलना और समानता के माध्यम से प्राप्त होता है। यह ज्ञान वस्तुओं और घटनाओं के बीच समानताओं को पहचानने से उत्पन्न होता है।
4. **शब्द** (Testimony) : शब्द ज्ञान वह है जो शब्दों या प्रमाणित स्रोतों से प्राप्त होता है, जैसे वेद, शास्त्र और विश्वसनीय व्यक्तियों का कथन।

न्याय दर्शन के अनुसार, ये चार प्रकार के ज्ञान सत्य और यथार्थ को समझने के लिए आवश्यक हैं। यह दर्शन तर्क और प्रमाण के महत्त्व को स्वीकार करता है और ज्ञान के विभिन्न स्रोतों को मान्यता देता है।

डॉ. श्रवण कुमार मोदी
सहायक प्राध्यापक, दर्शनशास्त्र विभाग
शिवदेनी राम अयोध्या प्रसाद महाविद्यालय
बारा चकिया,पूर्वी चम्पारण
मो0–9608685335
Email Id- shrawankumarmodi1973@gmail.com